The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार

डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक

किरण टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,

पण्डौल, मधुबनी

Email-ppandey322@gmail.com

Mob:-7309627485

सारांश

शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान ने सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पक्षों में वृद्धि या परिवर्तन किया है तथा नवीन प्रर्वतनों का अनुशीलन भी किया जाता है। शैक्षिक अनुसंधानों के द्वारा ही मौलिक प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जा सकता है, समस्याओं का समाधान किया जा सकता है इसके द्वारा नवीन ज्ञान में वृद्धि की जाती है। यह अन्य विषयों मे किये जाने वाले अनुसंधान से भिन्न है। अन्य विषयों के अनुसंधानों में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है, जब कि शैक्षिक अनुसंधानों में नवीन ज्ञान के साथ उसकी उपयोगिता भी होनी आवश्यक है।

नवाचार एक नया विचार, एक नया व्यवहार है अर्थात् शिक्षा को सरल, उपयोगी, व्यावहारिक, रूचिकर, रचनात्मक, क्रियात्मक एवं प्रासंगिक बनाना नवाचार है। आधुनिक युग में बच्चो के बहुमुखी और सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा पद्धति में नवाचार की आवश्यकता है तभी बच्चों में सकारात्मक विकास, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों का विकास संभव है। शिक्षा पद्धति में नवाचार शिक्षकों पर निर्भर करता है। शिक्षक नवाचार के द्वारा नवीन शिक्षण विधियों एवं पढ़ाने के तरीको में परिवर्तन कर के बच्चों को उनके कौशल एवं प्रतिभा से अवगत करा सकते हैं। शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार के प्रयोग द्वारा परम्परागत शिक्षा पद्धति को वर्तमान परिवेश के अनुरूप परिवर्तित किया जा सकता है।

प्रस्तावना

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्याय संगत और न्याय पूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता हैं। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता ,वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत् प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। सार्वभौमिक उच्चतर स्तरीय शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और सम्बर्द्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है। अगले दशक में भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा और इन युवाओं को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा।

शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षक का जो सम्मान पहले था आज नही है। धीरे–धीरे समय की गति के साथ उसके सम्मान में कमी आती गई। इस कार्य को पहले लोग अपना कर्त्तव्य समझकर करते थे लेकिन आज यह पेशा या व्यवसाय समझा जाने लगा है। पहले शिक्षक अपना परम कर्त्तव्य समझता था अपने शिष्य का विकास करना, उसकी उन्नति करना ,उसे समाज का कुशल और योग्य सदस्य के रूप में देखने की उसकी प्रबल लालसा होती थी, लेकिन आज ऐसा नही है। आज का शिक्षक अपने ज्ञान और शिक्षा से योग्य व्यक्ति पैदा करने में असफल रहा है, इसका कारण क्या है? आज यह प्रश्न शिक्षा–जगत के लिए विचारणीय बात है।

डॉ. भट्टाचार्य का कहना है कि'' शिक्षण कार्य समस्त कार्यों में पवित्रतम और परमावश्यक माना है क्योंकि ज्ञान–दान के समान दूसरा कोई भी परहिताय निर्दिष्ट कार्य नहीं है। शिक्षण की प्रक्रिया निश्चित रूप से अध्यापक शिक्षा पर निर्भर है, क्योंकि अध्यापक शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भावी अध्यापकगण निहित कौशल तथा तकनीकी से परिचित हो सकते हैं और उनमे दक्षतार्जन करते हुए अपेक्षित शिक्षण व्यवहारों को आत्मसात करने में सक्षम हो पाते हैं।''

मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि' शिक्षक विद्वान परिवार से होना चाहिए, उसको ब्रह्मनिष्ठ और ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए। शिक्षक के पास कितना ज्ञान है इसकी जॉच परिषदों में होती थी। यद्यपि उस समय शिक्षकों के लिए न कोई डिग्री आवश्यक थी और न प्रशिक्षण फिर भी उनके ज्ञान और क्षमता का परीक्षण समय–समय पर बराबर होता रहता था उस समय के विद्यार्थी उन्हीं शिक्षकों के पास पढ़ने जाते थे जिनके पास ज्ञान और सुन्दर चरित्र होता था।'

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार ज्ञान तथा विकास को सकारात्मक रूप प्रदान कर, उसे समाज के अनुकूल बनाना है। शिक्षा के विभिन्न प्रकार के अनुसंधान के द्वारा शिक्षण क्रियाओं के मध्य टपाने वाली

समस्याओं या बाधाओं को दूर कर उनके मार्ग को सरल बना देते हैं। शिक्षण की समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शिक्षा अनुसंधान कहते हैं।

शैक्षिक अनुसंधान के द्वारा ही मौलिक प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जा सका है समस्याओं का समाधान किया जा सकता है इसके द्वारा नवीन ज्ञान में वृद्धि की जाती है। यह अन्य विषयों में किये जाने वाले अनुसंधान से भिन्न है। अन्य विषयों के अनुसंधानों में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है, जबकि शैक्षिक अनुसंधानों में नवीन ज्ञान के साथ उसकी उपयोगिता भी होनी आवश्यक है। यदि नवीन ज्ञान है परन्तु उसकी वर्तमान में कोई उपयोगिता नही है तो वह शैक्षिक अनुसंधान के अन्तर्गत नही आता है।

अनुसंधान का एक मजबूत परिस्थितिकी तंत्र आज दुनिया में तेजी से होने वाले परिवर्तनों के साथ शायद पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन, जनसांख्यिकी गतिशीलता और प्रबंधन, जैव प्रौद्योगिकी, एक डिजिटल बाजार का विस्तार, मशीन लर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि, इस तरह के परिवर्तन है। यदि भारत को इन विषम क्षेत्रों में एक नेतृत्वकर्त्ता बनना है और वास्तव में अपने विशाल प्रतिभा पूल को फिर से एक प्रमुख ज्ञान समाज बनने की क्षमता प्राप्त कराना है तो आने वाले वर्षो और दशकों में, राष्ट्र को अपनी अनुसंधान क्षमताओं–संभावनाओं को सभी विषयों (डिसिप्लेन्स) में उत्पादन के साथ एक महत्वपूर्ण विस्तार की आवश्यकता होगी। आज, किसी भी राष्ट्र के आर्थिक, बौद्धिक, सामाजिक,पर्यावरणीय और प्रौद्योगिकीय विकास के लिए शोध का महत्व पहले से कहीं अधिक है।

शिक्षक शिक्षा अनुसंधान के प्रमुख मानदण्ड–

- शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तथ्यों की खोज करना नवीन सिद्धान्तों एवं सत्यों का प्रतिपादन करना तथा नवीन ज्ञान की वृद्धि करना।
- नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता होनी चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास मे सुधार तथा विकास करके उसे प्रभावशाली बनाया जा सके।
- शिक्षा अनुसंधान की समस्या क्षेत्र शिक्षण बालक का विकास करना।
- शिक्षा अनुसंधान की समस्या का स्वरूप इस प्रकार हो, जिसका प्रत्यक्षीकरण किया जा सकें तथा उसकी उपयोगिता हो सकें।

शैक्षिक विकास एवं प्रगति के लिए शैक्षिक अनुसंधान का अपना विशेष महत्व है। यह सामान्यतः शिक्षा के क्षेत्र में उपजी समस्याओं को हल करने में सहायक होती है। शिक्षा के विकास के स्वरूप को ज्ञात करने तथा वर्तमान शिक्षा से जुड़ी समस्याओं को ऑकने के लिए ऐतिहासिक, वर्णनात्मक विषय वस्तु विश्लेषण आदि उपागमों का प्रयोग किया जाता है। शैक्षिक अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अर्न्तअनुशासन उपागम पर बल दिया जाता है। शैक्षिक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न कमी को दूर करने के लिए प्रयोगात्मक अभिकल्पों को अपनाया जाता है। शैक्षिक अनुसंधान में यांत्रिक उपकरणों का प्रयोग असम्भव नही है परन्तु

कठिन अवश्य है। इसके अन्तर्गत ऑकड़ों को एकत्रित करने के लिए मापकों का प्रयोग किया जाता है, वे प्रायः गुणात्मक प्रकृति के होते हैं अतः इन अनुसंधानों से प्राप्त परिणामों की प्रकृति भी गुणात्मक होती है।

शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान की आवश्यकता

- ज्ञान संचित किया जाता है।
- ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार किया जाता है।
- ज्ञान की वृद्धि की जाती है।
- मौलिक प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने हेतु।
- मौलिक तथा स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु।
- शिक्षणशास्त्र के सिद्धान्तों का मूल्यांकन करना।
- भारतीय शिक्षा का प्रारूप अपनाने हेतु।
- कक्षा शिक्षण प्रभावशाली बनाने हेतु।
- पाठ्यक्रम एवं पुस्तकों का मूल्यांकन करने हेतु।
- माध्यमों की सार्थकता एवं उपयोगिता का मूल्यांकन करने में।
- विद्यालय प्रबंधों का मूल्यांकन करना।
- शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सामान्य अध्ययनों की अपेक्षा सूक्ष्म तथा विकासात्मक अध्ययनों की आवश्यकता है।
- छात्रों में नैतिक गुणों, मूल्यों तथा भावात्मक पक्षों के विकास की आवश्यकता के लिए।
- शिक्षा आयोगों तथा शिक्षा समितियों के लिए।
- शिक्षा में सुधार एवं परिवर्तन की आवश्यकता के क्षेत्र।

शैक्षिक अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्र

- शिक्षा दर्शन
- शैक्षिक समाजशास्त्र
- शैक्षिक मनोविज्ञान
- अध्यापक प्रशिक्षण एवं शिक्षण तन्त्र
- शैक्षिक प्रशासन
- पाठ्यक्रम की रचना
- शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

- वित्त प्रबन्ध
- शिक्षा इतिहास– आदि

इसके अलावा अगर शिक्षक–शिक्षा में नवाचार की बात करें तो नवाचार दो शब्दों से मिलकर बना है नव और आचार । नव का अर्थ नया अथवा नवीन से है और आचार का आशय परिवर्तन से है। इस प्रकार नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व में प्रचलित विधियों एवं पदार्थो इत्यादि में नवीनता का संचार करें। नवाचार के अन्तर्गत कुछ नया और उपयोगी अपनाया जाता है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार

हमारे देश में शैक्षिक मनकों के उत्थान और सतत् विकास के लिए शिक्षक प्रणाली का पुनरोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण एक शाक्तिशाली माध्यम है। कई ऐसे मुद्दे हैं जिनके लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार के लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रतिस्पर्धा एवं विकास की परिस्थिति में एक राष्ट्र को विकास के लिए शिक्षण, एकीकृत शिक्षण, शिक्षण पाठ्यक्रम और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में अभिनव परिवर्तन की आवश्यकता है। शिक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु सर्व प्रथम शिक्षकों को नवीन ज्ञान, कौशलों, दक्षताओं, शिक्षण विधियों, तकनीकों, अनुसंधान व नवाचार के ज्ञान एवं इसके व्यावहारिक प्रयोग में पारंगत होना आवश्यक है। नवीन शैक्षिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए शिक्षकों को स्वयं को नए तरीकों से अवगत होने की आवश्यकता है। आज वीडियो, इन्टरनेट, ब्रॉडकास्ट का समय है। बच्चे इस इन्टरेक्टिव मीडिया के माध्यम से आसानी से सीख सकते है। इस लिए शिक्षकों को वर्तमान प्रौद्योगिकी के साथ अपने आपकों निरन्तर बनाये रखना होगा। सीखना अनवरत है और इसमें निरन्तर विकास होता रहता है। एक योग्य शिक्षक स्वयं की खोज द्वारा पाठ्यक्रम को रोचक एवं बोधगम्य बनाता है। शिक्षक शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नही है बल्कि अधिगमकर्त्ता को ऐसे निर्देश देना है जिससे वे सूचनाओं को प्राप्त कर स्वयं ज्ञानार्जन की अनुभूति कर अपने आवश्यक कार्यो के अनुरूप उपयोग में ला सकें। शिक्षक–शिक्षा में नवाचार को अपनाकर न केवल पाठ्यक्रम की पूर्ति की जा रही है अपितु भविष्य की सम्भावनाओं तथा प्रतिस्पर्द्धा में सफलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षक शिक्षा नवाचार द्वारा ऐसी प्रभावपूर्ण अधिगम परिस्थिति का निर्माण व प्रयोग करते हैं जिसमें करके सीखने एवं अभ्यास द्वारा सीखने और प्रत्यक्ष अनुभवों को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हो।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार लाने के उद्देश्य से ही वर्तमान में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में '' राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद विनिमय 2014 '' के द्वारा कुछ प्रभावशाली परिवर्तन किए गए है जैसे द्विवर्षीय शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षा में स्नातक (बी.एड.), शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम.एड.), शारीरिक शिक्षा में स्नातक (बी.पी.एड.), शारीरिक शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम.पी.एड.) तथा तीन वर्षीय एकीकृत बी.एड.–एम.एड., चार वर्षीय एकीकृत बी.ए.–बी.एड., बी.एस.सी–बी.एड. एव बी.एल.एड पाठ्यक्रम आदि। नवाचारों के रूप में सूक्ष्म शिक्षण, विभिन्न शिक्षण कौशल, वनशाला कार्यक्रम, सामुदायिक सेवाएँ, खण्ड शिक्षण, स्वाध्याय पर आधारित अभ्यास कार्यक्रम

आदि को सम्मिलित किया गया है। सैद्धान्तिक भाग के साथ–साथ नवीन पाठ्यक्रम में भाषा का ज्ञान, विषय–वस्तु के अध्ययन तथा प्रत्यावर्तन के साथ ड्रामा एवं कला जैसी नवीनतम क्रियाओं का अध्ययन व संचालन नवाचार ही है। क्षेत्रीय कार्यक्रम के निर्धारित पाठ्यक्रम में शिक्षण शैली, अधिगम का मूल्यांकन, कम्प्यूटर शिक्षा, साहित्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, पैनल चर्चा, योग शिक्षा, स्वास्थ्य संबन्धी क्रियाएँ आदि को सम्मिलित किया गया है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग के द्वारा लाभान्वित वर्ग को क्या सीखना, कैसे सीखना, कब सीखना तथा क्यों सीखना के साथ–साथ सीखने की उपलब्धियों का पता लगाने लिए मूल्यांकन के नवीन उपकरणों की जानकारी दी जाती है। एक नवाचारी शिक्षक शिक्षण संबन्धी समस्याओं का समाधान स्वयं के स्तर पर करने के साथ ही दूसरे शिक्षकों को ऐसे समाधान द्वारा प्रेरणा प्रदान करते हैं। नवाचार से मानसिक मंथन विकसित होता है। नवाचारों के प्रयोग से कक्षा–कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण एवं अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय रखने का अवसर प्रदान किया जाता है। शिक्षक शिक्षा की वास्तविकता एवं व्यवहारिक उपादेयता, इनके क्रियान्वयन की सफलता नवाचारों की खोज से ही सम्भव है। आज की वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षक–शिक्षा को 'आपदा को अवसर में बदलना' नवाचार करना होगा।

शिक्षक–शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता

शिक्षक समाज का वो हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है विद्यालय और शिक्षक दोनों ही अपने परिवेश से प्रभाव ग्रहण करते हैं। शिक्षक–प्रशिक्षण एवं स्कूली शिक्षा का गहन सम्बन्ध है। ये दोनों ही एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है।

विनिमय 2009 ने भी शिक्षको की क्षमता सम्बर्द्धन एवं गुणवत्ता में विकास के लिए शिक्षक–शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता महसूस की है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता निम्न सन्दर्भो में देखा जा सकता है।

- शिक्षक शिक्षा को समय सापेक्ष परिवर्तन युक्त बनाने के लिए
- शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए
- शिक्षक शिक्षा को तकनीकी युक्त बनाने के लिए
- अभिव्यक्ति क्षमता एवं शिक्षण दक्षता के विकास हेतु
- छात्राध्यापकों को प्रत्यक्ष एवं स्थायी ज्ञान प्रदान करने योग्य बनाने हेतु
- छात्राध्यापकों को क्रियाशील बनाने के लिए
- छात्राध्यापकों में स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों एवं विद्यालय में समन्वय स्थापित करने के लिए
- शिक्षण विधियों में नवीनता लाने हेतु
- सामाजिक आकांक्षाओं एव अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु

- वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के प्रसार हेतु
- शिक्षा के उद्देश्य, उसकी पाठ्यचर्या में नूतन विषय सामाग्री के विकास के लिए।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार का महत्व

- नवाचार द्वारा शिक्षक बच्चों को बोझिल,ऊबाऊ और अरूचिकर शिक्षण से हटाकर आनन्दमयी एवं रूचिकर शिक्षा देने में सक्षम होते है।
- यह शिक्षक को अपने काम के प्रति रचनात्मक, जिम्मेदार, ठोस एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने में सहयोग करता है।
- नवाचार के माध्यम से शिक्षक परम्परागत शैक्षिक जड़ता को तोड़ते हुए नवीन दक्षताओं को विकसित कर सकता है।
- नवाचार के द्वारा शिक्षक स्वयं सृजनशील एवं अध्ययनशील बनते हैं।
- नवाचार से शिक्षक का शैक्षिक पुनरूत्थान होता है।
- छात्राध्यापक शिक्षण में प्रायोगिक एवं व्यावहारिक कार्यो को सम्पादित करने हेतु आवश्यक तैयारी एवं प्रभावी क्रियान्वयन कर सकते है।
- नवाचार के माध्यम से विद्यालय एवं समुदाय के मौजूदा संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते है।
- छात्राध्यापक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- नवाचार के द्वारा ही शिक्षणोत्तर गतिविधियों का आयोजन सम्भव है।
- नवाचार से छात्राध्यापक बाल केन्द्रित उपागम एवं गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सीख सकते हैं।

निहितार्थ

शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान ने सैद्धात्तिक तथा व्यावहारिक पक्षों में वृद्धि या परिवर्तन किया है तथा नवीन प्रवर्तनों का अनुशीलन भी किया जाता है। शिक्षक–शिक्षा में अनुसंधानों से मानवीय ज्ञान में वृद्धि होती है और विकास की क्रियाओं में सुधार तथा परिवर्तन किया जाता है। मानवीय ज्ञान की तीन अवस्थाएँ होती है।

- ज्ञान का संचयन (Preservation of Knowledge)
- ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार (Transmission of Knowledge)
- ज्ञान मे वृद्धि (Advacement of Knowledge)

शिक्षक शिक्षा में अनुसंधानों के निष्कर्षों की उपयोगिता होती है। यह शिक्षा अनुसंधान की प्रमुख विशेषता है। इसके अतिरिक्त नवाचार शैक्षिक व्यवस्था और कार्य प्रणाली को जीवन्त बनाये रखने के लिए आवश्यक है।

इसके अभाव में शैक्षिक लक्ष्यों और प्रक्रिया में व्यापक अन्तर हो सकता है। इसका प्रयोग वर्तमान के साथ ही भविष्य की अपेक्षाओं की भी पूर्ति करने में सहायक है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार द्वारा छात्राध्यापक सामुदायिक सहभागिता, अभिनव शिक्षण, तकनीकी, खेल–खेल में शिक्षा, सरल अंग्रेजी अधिगम, बाल संसद, कला शिल्प से सर्वांगीण विकास, कान्सेप्ट मैपिंग, चित्रकथा के माध्यम से शिक्षा आदि का प्रयोग अपने भावी जीवन में कर पायेंगे। नवाचार से शिक्षण में गुणात्मक उन्नयन होता है, शिक्षा को दिशा बोध प्राप्त होता है। जिससे व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान एवं नवाचार की महत्ता काफी प्रभावपूर्ण स्वीकार की जाती है।

अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान एवं नवाचार का आधुनिक समय में शिक्षण एवं प्रशिक्षण पर पूर्णरूपेण प्रभावी दिखाई दे रहा है।

सन्दर्भ

- सिंह कीर्ति (शोध छात्रा), शिक्षा क्षेत्र में शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता व उसकी उपयोगिता।
- 'शरतेन्दु' दुबे डॉ. सत्यनारायण, अध्यापक शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- शर्मा, डॉ. निशा एवं शर्मा नेहा, शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका।
- पटेल, माधव (2018). शिक्षा में नवाचार : Teacher of India.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/03

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय

For publication of research paper title

शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com